-: अनुक्रमणिका :-

पृष्ठ संख्या

प्राक्कथन

प्रथम अध्याय : "मृदुला गर्ग : व्यक्तित्व एवं कृतित्व" 1 - 17

१.१ व्यक्तित्व परिचय

१.१.१ बचपन

१.१.२ शिक्षा

१.१.३ पारिवारिक जीवन

१.१.४ विवाह

१.१.५ पुरस्कार

१.१.६ प्रभाव

१.१.७ रचना-प्रक्रिया

१.१.८ साहित्य संबंधी विचार

१.१.९ व्यक्तित्व

१.२ कृतित्व

१.२.१ उपन्यास साहित्य

१.२.२ कहानी साहित्य

१.२.३ अन्य साहित्य

१.२.३ अन्य साहित्य

१.३ निष्कर्ष

द्वितीय अध्याय : "मैं और मैं" उपन्यास की कथावस्तु का अनुशीलन 18 - 32

२.१ उपन्यास की कथावस्तु

२.२ कथावस्तु का अनुशीलन

२.३ निष्कर्ष

पृष्ठ संख्या

तृतीय अध्याय : "मैं और मैं" उपन्यास में चित्रित मनोवैज्ञानिकता 33-58

३.१ मनोविश्लेषण

३.२ गत्यात्मक पहलू

३.३ स्थलरुपेखीय पहलू

३.२.१ इदम्

३.२.२ अहम्

३.२.३ परम् अहम्

३.३.१ चेतन

३.३.२ अवचेतन

३.३.३ अचेतन

३.४ जीवन मूल प्रवृत्ति

३.५ मृत्यु मूल प्रवृत्ति

३.६ सक्रियता- निष्क्रियता

३.७ वास्तविकता और आनंद सिद्धान्त

३.८ खंड़ित व्यक्तित्व

३.८.१ "मैं" पन

३.८.२ परिस्थितियाँ

३.८.३ मनस्ताप

३.८.४ द्वंद्व

३.८.५ चिंता

३.८.६ स्वप्न

३.८.७ स्नायु दुर्बलता

३.८.८ बहुविध विकृति

३.८.९ अहम्

पृष्ठ संख्या

३.८.१० दमण

३.८.११ प्रतिशोध की भावना

३.८.१२ संशय

३.८.१३ फंतासी

३.८.१४ कुण्ठा

३.८.१५ आत्महीनता ग्रंथि

३.८.१६ निष्कर्ष

चतुर्थ अध्याय : उपन्यास में चित्रित समस्याएँ। ५१ - ७३

४.१ सामाजिक समस्या

४.२ आर्थिक समस्या

४.३ पारिवारिक समस्या

४.४ विफलता की समस्या

४.५ अहम्

पंचम अध्याय : प्रस्तुति शिल्प ७४ - ८८

५.१ शिल्प-विधि : स्वरुप निरुपण

५.२ शिल्प-विधि का महत्त्व

५.३ भाषा

५.३.१ तत्सम शब्द

५.३.२ तद्भव शब्द

५.३.३ विदेशी शब्द

५.३.३.१ अरबी-फारसी शब्द

५.३.३.२ अंगेजी शब्द

५.३.४ अपशब्द

५.३.५ कहावतें तथा मुहावरें

पृष्ठ संख्या

५.३.६ पात्रानुकूल भाषा

५.४ शैली

५.४.१ विवरणात्मक शैली

५.४.२ आत्मकथात्मक शैली

५.४.३ पूर्वदीप्ति शैली

५.४.४ प्रतीकात्मक शैली

५.४.५ स्वप्न - विश्लेषण शैली

५.४.६ दिवा-स्वप्न शैली

५.४.७ विश्लेषण शैली

५.४.८ व्यंग्यात्मक शैली

उपसंहार 89-98

संदर्भ ग्रंथ सूची

-o-o-o-o-o-o-